

## कविता का सारांश

यह कविता भारत माता (भारति) की स्तुति में लिखी गई है। कवि ने भारत देश की प्राकृतिक सुंदरता, पवित्रता और महानता का वर्णन किया है।

कवि बताते हैं कि भारत भूमि सोने जैसी उपजाऊ है, जहाँ सुंदर कमल और फसलें लहलहाती हैं। समुद्र अपनी लहरों से भारत माता के चरण धोता है और उनकी महिमा का गुणगान करता है।

देश में पेड़-पौधे, वन, लताएँ और फूल मानो भारत माता के वस्त्र हैं, जो उसे और भी सुंदर बनाते हैं। गंगा नदी का पवित्र जल उनके गले का हार जैसा है।

हिमालय पर्वत बर्फ का मुकुट बनकर भारत माता के सिर को सुशोभित करता है। चारों दिशाओं में "ॐ" की पवित्र ध्वनि गूंजती है, जो देश की आध्यात्मिकता और महानता को दर्शाती है।

अंत में कवि भारत माता की विजय और जय की कामना करते हैं।

कविता का संदेश:-

- हमें अपने देश भारत की महानता और सुंदरता पर गर्व करना चाहिए।
- साथ ही, हमें उसकी उन्नति और सम्मान के लिए सदैव प्रयास करना चाहिए।

## शब्दार्थ:

- |                                      |  |
|--------------------------------------|--|
| • भारति / भारती — सरस्वती, भारत माता | • तृण — घास                                    |
| • कनक — सोना                         | • लता — बेल                                    |
| • शस्य — फसल, अन्न                   | • वसन — वस्त्र                                 |
| • कमल — फूल                          | • अंचल — आँचल, किनारा                          |
| • पदतल — पैरों के नीचे               | • सुमन — फूल                                   |
| • शतदल — कमल (सौ पंखुड़ियों वाला)    | • ज्योतिर्जल — प्रकाशयुक्त जल                  |
| • गर्जितोर्मि — गरजती हुई लहरें      | • धवल — सफेद, उज्ज्वल                          |
| • शुचि — पवित्र, शुद्ध               | • धार — जोर की वर्षा, धारा के रूप में बरसना    |
| • युगल — जोड़ा                       | • खचित — चिह्नित, अंकित, जड़ा हुआ, आबद्ध       |
| • स्तव — स्तुति, प्रशंसा             | • मुकुट — ताज                                  |
| • तरु — पेड़                         | • शुभ्र — उज्ज्वल, सफेद, श्वेतवर्ण, चाँदी जैसा |

- हिम — बर्फ
- तुषार — ओस या जमी हुई बर्फ
- प्राण — जीवन, सांस
- प्रणव — 'ॐ'
- ओंकार — 'ॐ' की ध्वनि
- उदार — महान, दयालु
- शतमुख — सौ मुख वाला
- शतरव — अनेक ध्वनियाँ
- मुखर — गूँजता हुआ

## अभ्यास

### रचना से संवाद

#### मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "भारति, जय, विजयकरे" कविता में विशेष रूप से—

- (क) भारत की भौगोलिक संरचना की प्रशस्ति की गई है।
- (ख) भारत की सांस्कृतिक विविधता बताई गई है।
- (ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।
- (घ) भारत के खनिज पदार्थों के बारे में बताया गया है।

उत्तर: (ग) भारत के ज्ञान, प्रकृति और संपन्नता की प्रशंसा की गई है।

तर्क: कविता में भारत की प्राकृतिक सुंदरता (गंगा, हिमालय), आध्यात्मिकता (ॐ) और समृद्धि (कनक-शस्य) का वर्णन है, इसलिए यह विकल्प सबसे उपयुक्त है।

2. "कनक-शस्य-कमल धरे" पंक्ति का भावार्थ है—

- (क) भारत की धन-धान्य संपन्नता
- (ख) भारत की नदियों का सौंदर्य
- (ग) भारत के लोक-जीवन की सुंदरता
- (घ) भारत की सैन्य शक्ति और औद्योगिक विकास

उत्तर: (क) भारत की धन-धान्य संपन्नता

तर्क: "कनक-शस्य-कमल धरे" में सोना, फसल और कमल का उल्लेख है, जो भारत की समृद्धि और उर्वरता को दर्शाता है।

3. समस्त विश्व में भारत के महत्व का उद्घोष करने वाली पंक्तियाँ हैं—

- (क) गंगा ज्योतिर्जल-कण/ धवल धार हार गले
- (ख) गर्जितोर्मि सागर-जल/ धोता शुचि चरण युगल
- (ग) भारति, जय, विजयकरे/ कनक-शस्य-कमलधरे!

(घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

उत्तर: (घ) ध्वनित दिशाएँ उदार/ शतमुख-शतरव-मुखरे!

तर्क: इन पंक्तियों में चारों दिशाओं में गूँजती ध्वनि का वर्णन है, जो पूरे विश्व में भारत की महिमा के प्रसार को दर्शाता है।

4. कविता की भाषा और शैली किस विशेषता से संपन्न है?

(क) सरल, बोल-चाल की भाषा

(ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

(ग) सरस और हास्य-व्यंग्यपूर्ण

(घ) संवादात्मक और विश्लेषणात्मक

उत्तर: (ख) संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त

तर्क: कविता में "कनक-शस्य", "गर्जितोर्मि", "ज्योतिर्जल" जैसे संस्कृतनिष्ठ और समासयुक्त शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5. भारत के वस्त्रों में 'तरु-तृण-वन-लता' और गले में 'गंगा-धारा' को चित्रित कर कवि किस प्रकार की चेतना का संदेश देते हैं?

(क) पर्यावरणीय और सांस्कृतिक

(ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम

(ग) ऐतिहासिक और भौगोलिक

(घ) सामाजिक और राजनीतिक

उत्तर: (ख) राष्ट्रीयता और देशप्रेम

तर्क: भारत को माता के रूप में सजाकर उसकी सुंदरता का वर्णन किया गया है, जो देशप्रेम और राष्ट्रीय भावना को प्रकट करता है।

### अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझते हुए इनका भाव स्पष्ट कीजिए—

(क) "लंका पदतल शतदल,

गर्जितोर्मि सागर-जल

धोता शुचि चरण युगल!"

उत्तर:

- अर्थ: भारत माता के चरण कमल के समान सुंदर हैं। समुद्र की गरजती हुई लहरें उनके पवित्र चरणों को धोती रहती हैं और लंका उनके चरणों के पास स्थित है।
- भाव: इन पंक्तियों में कवि ने भारत की महानता और पवित्रता का वर्णन किया है। समुद्र भी भारत माता की सेवा करता हुआ प्रतीत होता है, जिससे देश की महिमा और श्रेष्ठता प्रकट होती है।

(ख) “प्राण प्रणव ओंकार,  
ध्वनित दिशाएँ उदार,  
शतमुख-शतरव-मुखरे!”

उत्तर:

- अर्थ: भारत में 'ॐ' की पवित्र ध्वनि प्राणों के समान गूंजती है। यह ध्वनि चारों दिशाओं में फैलकर अनेक आवाज़ों के रूप में गूंज रही है।
- भाव: इन पंक्तियों में भारत की आध्यात्मिकता और महानता का वर्णन है। पूरे देश में पवित्रता और धार्मिक भावना फैली हुई है, जो भारत को विशेष और महान बनाती है।

### मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. कविता में कवि की किस भावना की अभिव्यक्ति मिलती है?

उत्तर: कविता में कवि की देशभक्ति, गौरव और श्रद्धा की भावना व्यक्त हुई है। कवि भारत माता की महानता और सुंदरता का गुणगान करते हैं।

2. कविता में भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किस प्रकार किया गया है? क्या आप मानते हैं कि प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम का काम है? क्यों?

उत्तर: कवि ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य को गंगा, हिमालय, पेड़-पौधे, वन, लताएँ और समुद्र के माध्यम से बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है।

हाँ, प्रकृति का संरक्षण करना भी देशप्रेम है, क्योंकि प्रकृति ही हमारे देश की सुंदरता और जीवन का आधार है। इसे बचाना हमारा कर्तव्य है।

3. “कनक-शस्य-कमलधरे!” पंक्ति भारतभूमि की किन-किन विशेषताओं की ओर संकेत कर रही है?

उत्तर: यह पंक्ति भारत की समृद्धि, उर्वरता और सुंदरता को दर्शाती है।

- कनक → धन (सोना)
- शस्य → फसल (अन्न)
- कमल → सुंदरता

4. “मुकुट शुभ्र हिम-तुषार” पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट बताया गया है, क्यों?

उत्तर: हिमालय भारत के उत्तर में स्थित है और बर्फ से ढका हुआ बहुत सुंदर दिखाई देता है। इसलिए उसे भारत माता का मुकुट (ताज) कहा गया है, जो उसकी शोभा बढ़ाता है।

## विधा से संवाद

### कविता का सौंदर्य

नीचे दी गई पंक्तियों को पढ़िए —

“भारति, जय, विजयकरे!

कनक-शस्य-कमलधरे!”

इन पंक्तियों में कवि ने चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए भारतभूमि का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता की कुछ अन्य विशेषताओं की सूची नीचे दी गई है। कविता में से उन विशेषताओं वाली पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए—

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
<ul style="list-style-type: none"> <li>• प्रकृति का मानवीकरण</li> <li>• आलंकारिक प्रयोग</li> <li>• समस्त पद / सामासिक पद</li> <li>• संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग</li> </ul>	

उत्तर:

विशेषताएँ	कविता की पंक्तियाँ
<ul style="list-style-type: none"> <li>• प्रकृति का मानवीकरण</li> <li>• आलंकारिक प्रयोग</li> <li>• समस्त पद / सामासिक पद</li> <li>• संस्कृतनिष्ठ भाषा प्रयोग</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>- “गर्जितोर्मि सागर-जल / धोता शुचि चरण युगल”</li> <li>- “कनक-शस्य-कमलधरे!”</li> <li>- “गर्जितोर्मि”, “ज्योतिर्जल”, “कनक-शस्य”</li> <li>- “प्राण प्रणव ओंकार / ध्वनित दिशाएँ उदार”</li> </ul>

## विषयों से संवाद

1. स्वतंत्रता-पूर्व लिखी इस कविता में भारत को ज्ञान, कृषि और संस्कृति के प्रतीक/परिचायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वर्तमान संदर्भ में यदि आपको भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करने का अवसर मिले तो आप भारत की किन विशेषताओं और विविधताओं को सम्मिलित करेंगे?

उत्तर: आज के बदलते दौर में यदि मुझे भारत को एक नए रूप में प्रस्तुत करना हो, तो मैं प्राचीन विशेषताओं के साथ निम्नलिखित आधुनिक पहलुओं को जोड़ना चाहूँगा:

- तकनीकी और डिजिटल शक्ति: भारत आज 'डिजिटल इंडिया' और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के क्षेत्र में विश्व का नेतृत्व कर रहा है।
- अंतरिक्ष अन्वेषण: चंद्रयान और मंगलयान जैसी सफलताओं के साथ भारत की वैज्ञानिक प्रगति।
- युवा शक्ति और नवाचार (Innovation): भारत के स्टार्टअप्स और युवाओं की उद्यमशीलता।
- लोकतांत्रिक सुदृढ़ता: विश्व के सबसे बड़े और जीवंत लोकतंत्र के रूप में भारत की पहचान।

- वैश्विक शांति दूत: 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना के साथ विश्व कल्याण में भारत की भूमिका।

2. "शतमुख-शतरव-मुखरे!" पंक्ति में भारत के विविध पर्व, उत्सव और रीति-रिवाज किस प्रकार 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की संकल्पना को साकार करते हैं?

उत्तर: "शतमुख-शतरव-मुखरे" का अर्थ है सैकड़ों मुखों से होने वाली गूँज। यह पंक्ति भारत की बहुभाषिकता और सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाती है:

- भारत में अलग-अलग राज्यों के अपने पर्व हैं (जैसे पोंगल, बिहू, बैसाखी, छठ, और गरबा), लेकिन इन सबके पीछे की भावना एक ही है—प्रकृति का आभार और खुशियों को साझा करना।
- जब पूरा देश अलग-अलग भाषाओं में एक ही राष्ट्रगान गाता है या अलग-अलग खान-पान के बावजूद एक-दूसरे के त्योहारों में शामिल होता है, तो वह 'विविधता में एकता' को प्रदर्शित करता है।
- यही अनेकता में छिपी एकता 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की नींव रखती है, जहाँ हर संस्कृति का 'शतरव' (सैकड़ों स्वर) मिलकर भारत माता की एक ही जयध्वनि करता है।

3. भारत को सुदृढ़ करने में इसकी प्रकृति, संस्कृति और ज्ञान-परंपरा के महत्व को बताते हुए संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर: भारत की शक्ति उसके भूगोल, इतिहास और दर्शन के संगम में निहित है।

- प्रकृति: हिमालय जैसा सुरक्षा कवच और गंगा-यमुना जैसी जीवनदायिनी नदियाँ भारत को आर्थिक और पारिस्थितिक रूप से समृद्ध बनाती हैं। उपजाऊ मिट्टी और विविध जलवायु हमें कृषि में आत्मनिर्भर बनाती है।
- संस्कृति: हमारी संस्कृति सहिष्णुता और सामंजस्य सिखाती है। विभिन्न धर्मों और परंपराओं का सह-अस्तित्व समाज को आंतरिक रूप से मजबूत बनाता है, जिससे राष्ट्र में शांति और स्थिरता बनी रहती है।
- ज्ञान-परंपरा: प्राचीन वेदों से लेकर आधुनिक विज्ञान तक, भारत हमेशा 'विश्व गुरु' रहा है। आयुर्वेद, योग और शून्य (Zero) का आविष्कार हमारे बौद्धिक सामर्थ्य के प्रतीक हैं।

निष्कर्ष: जब हम अपनी प्रकृति की रक्षा करेंगे, अपनी संस्कृति पर गर्व करेंगे और अपने ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ेंगे, तभी भारत एक सशक्त राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर चमकता रहेगा।

4. कविता में गंगा को भारत के स्वच्छ और श्वेत हार एवं हिमालय को मुकुट के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। वर्तमान संदर्भ में बताइए कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन ने हमारी नदियों और हिमालय को किस प्रकार प्रभावित किया है?

उत्तर: कविता में हिमालय को 'शुभ्र मुकुट' और गंगा को 'धवल हार' (सफेद हार) कहा गया है, लेकिन वर्तमान स्थिति चिंताजनक है:

- हिमालय पर प्रभाव: ग्लोबल वार्मिंग के कारण हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इससे आने वाले समय में नदियों के सूखने और अचानक बाढ़ (Cloudbursts) आने का खतरा बढ़ गया है। 'शुभ्र मुकुट' की बर्फ कम हो रही है।
- नदियों पर प्रभाव: औद्योगिक कचरे और प्लास्टिक प्रदूषण ने गंगा जैसी पवित्र नदियों के 'धवल हार' को मैला कर दिया है। जल की शुद्धता समाप्त हो रही है और जलीय जीवों का अस्तित्व खतरे में है।
- जलवायु परिवर्तन: बेमौसम बारिश और चक्रवात हमारी कृषि (कनक-शस्य) को नुकसान पहुँचा रहे हैं।

निष्कर्ष: यदि हमने समय रहते अपनी जीवनशैली नहीं बदली, तो कविता में वर्णित यह प्राकृतिक सौंदर्य केवल किताबों तक ही सीमित रह जाएगा। प्रकृति का संरक्षण ही भारत माता की सच्ची सेवा है।

## विविध रंग भारत के

आप अपने कक्षा-समूह में मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता पर आधारित एक पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज तैयार कीजिए और इसे अपनी कक्षा में दिखाइए। आप भारत के विभिन्न राज्यों पर केंद्रित पावरपॉइंट प्रस्तुति/पोस्टर/चार्ट/कोलाज भी बना सकते हैं।

उत्तर:

# विविध रंग भारत के

भाषा अनेक, भावना एक – यही है भारत की विशेषता  
“एक भारत, श्रेष्ठ भारत”

### भाषाएँ

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। हिंदी, अंग्रेजी के साथ-साथ तमिल, तेलुगु, बंगाली, मराठी, पंजाबी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम आदि हमारी भाषाई धरोहर हैं।

हिंदी, कन्नड़, वाशला, मराठी, गुजराती

### त्योहार

हमारे त्योहार हमारी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। दीपावली, ईद, होली, क्रिसमस, बैसाखी, ओणम, बिहु, पोंगल आदि त्योहार हमें प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हैं।

दीपावली, होली, ईद, बैसाखी, ओणम, बिहु, पोंगल

### वेशभूषा

भारत की वेशभूषा वहाँ की जलवायु, भौगोलिक स्थितियों और परंपराओं को दर्शाती है। साड़ी, सलवार-कुर्ता, धोती, लहंगा, फुलकारी, भुगा सिल्क, पगड़ी आदि हमारी विविधता की पहचान हैं।

### भोजन

हर राज्य का अपना पारंपरिक भोजन है जो उसकी संस्कृति और स्वाद को दर्शाता है। ठोकला, इडली, सरसों का साग, लिट्टी-चोखा, डोसा, धाली, माछ-भात आदि हमारे भोजन की विविधता हैं।

ठोकला, इडली, सरसों का साग, लिट्टी-चोखा, डोसा, माछ-भात

### नृत्य और संगीत

भारत के हर क्षेत्र की अपनी लोक नृत्य और संगीत शैली है। कथक, भरतनाट्यम, भांगड़ा, मरवा, ओडिसी, मणिपुरी, कुचिपुड़ी, प्रत्येक कला रूप हमारी सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाते हैं।

### रीति-रिवाज और परंपराएँ

हमारी परंपराएँ, संस्कार और रीति-रिवाज हमें जोड़ते हैं। अतिथि देवो भवः, वसुधैव कुटुम्बकम्, नमस्ते और बड़ों का सम्मान हमारी संस्कृति की पहचान हैं।

अतिथि देवो भवः, वसुधैव कुटुम्बकम्, बड़ों का सम्मान

विविधता में ही है हमारी एकता,  
यही है भारत की सबसे बड़ी शक्ति।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

## सृजन

1. मान लीजिए आपको भारत को एक मनुष्य के रूप में कल्पित करते हुए सुसज्जित करने का अवसर मिले तो आप अपने राज्य के किन सांस्कृतिक, पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, चिह्नों, पुष्पों आदि का प्रयोग कर उसकी साज-सज्जा करेंगे?

उत्तर: यदि भारत को एक मनुष्य के रूप में सजाना हो और मैं गुजरात (उदाहरण के तौर पर) की सांस्कृतिक विरासत का उपयोग करूँ, तो मैं उसे इस प्रकार सुसज्जित करूँगा:

- वेशभूषा: भारत माता को सुनहरी किनारी वाली पाटन की पटोला साड़ी पहनाऊँगा, जो अपनी जटिल बुनाई और जीवंत रंगों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पुरुषों के रूप में कल्पना करने पर उन्हें केड़िया और धोती पहनाई जा सकती है।
- आभूषण: उनके हाथों में कच्ची चांदी के कंगन और गले में हार होगा। माथे पर एक छोटा-सा 'कुमकुम' का तिलक होगा जो सौभाग्य का प्रतीक है।

- चिह्न: हाथ में चरखा होगा (गांधी जी की विरासत और आत्मनिर्भरता का प्रतीक)।
- पुष्प: गेंदे के फूलों की माला होगी, जिसका उपयोग गुजरात के हर शुभ कार्य में किया जाता है।
- साज-सज्जा: परिधान पर शीशे (Mirror work) का बारीक काम होगा, जो भारत की चमक और बहुआयामी संस्कृति को दर्शाएगा।

2. भारत पर आधारित एक डाक टिकट, पोस्टर या पुस्तक के लिए आवरण पृष्ठ बनाइए और बताइए कि आप उसमें किन-किन प्रतीकों को सम्मिलित करेंगे और क्यों?

उत्तर: भारत पर आधारित पोस्टर या डाक टिकट में मैं ये प्रतीक शामिल करूँगा—

- अशोक चक्र: केंद्र में, जो धर्म और निरंतर प्रगति का प्रतीक है।
- कमल का फूल: कीचड़ में खिलकर भी पवित्र रहने की प्रेरणा देने वाला हमारा राष्ट्रीय पुष्प।
- इसरो (ISRO) का रॉकेट: भारत की वैज्ञानिक उपलब्धि और आसमान छूने की ज़िद दिखाने के लिए।
- गेहूँ की बालियाँ: भारत के किसानों और खाद्य सुरक्षा (कृषि प्रधानता) के सम्मान में।
- विभिन्न धर्मों के प्रतीक चिह्न: एक छोटे और सुंदर कोलाज के रूप में, जो हमारी धर्मनिरपेक्षता को दर्शाता है।
- तिरंगे की लहर: जो पृष्ठभूमि (Background) में होगी, जो राष्ट्रभक्ति का संचार करेगी।

कारण: यह संयोजन दर्शाता है कि भारत अपनी प्राचीन जड़ों (संस्कृति) को थामे हुए आधुनिक विज्ञान की ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है।

### 3. नदी की यात्रा

गंगा नदी की अपने उद्गम से लेकर बंगाल की खाड़ी में विलीन होने तक की पूरी यात्रा के बीच में आने वाली प्राकृतिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि विशेषताओं का वर्णन करते हुए एक रोचक यात्रा-वृत्तांत लिखिए।

(संकेत— पर्वतीय सौंदर्य से लेकर गंगासागर तक की संस्कृति इत्यादि)

उत्तर: गंगा नदी की यात्रा (यात्रा-वृत्तांत)

#### मुक्ति की धारा - मेरी यात्रा

"मैं गंगा हूँ। मेरी यात्रा हिमालय की ऊँची और बर्फीली चोटियों पर स्थित गंगोत्री (गोमुख) से शुरू होती है। वहाँ मेरा रूप एक नन्हीं, चंचल कन्या जैसा है, जो पत्थरों से टकराती, शोर मचाती नीचे उतरती है। ऋषिकेश और हरिद्वार पहुँचते ही मेरा रूप शांत और गंभीर हो जाता है। यहाँ शाम को जब हज़ारों दीये मेरी लहरों पर तैरते हैं, तो मेरा मन भक्ति से भर उठता है।

जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ती हूँ, मैदानी इलाकों (उत्तर प्रदेश और बिहार) में मेरा विस्तार बढ़ जाता है। यहाँ मैं 'कनक-शस्य' यानी सोने जैसी फसलों को सींचती हूँ। प्रयागराज में मेरा मिलन यमुना से होता है, जिसे दुनिया 'संगम' कहती है। यहाँ की संस्कृति और भाषा में एक अद्भुत मिठास है। वाराणसी (काशी) पहुँचकर मैं सदियों पुरानी सभ्यता, घाटों और मंत्रोच्चार की साक्षी बनती हूँ।

मेरी यात्रा का अंतिम पड़ाव पश्चिम बंगाल है। यहाँ मेरी भाषा बदल जाती है, लोग मुझे 'माँ गांगा' कहते हैं और यहाँ की हरियाली मन मोह लेती है। अंत में, गंगासागर पहुँचकर मैं अपनी सारी थकान मिटाकर विशाल बंगाल की खाड़ी (समुद्र) में विलीन हो जाती हूँ। मेरी यह यात्रा केवल पानी का बहना नहीं, बल्कि भारत की कला, भाषा, धर्म और जीवन का प्रवाह है।"

## भाषा से संवाद

### व्याकरण की बात

#### बहुभाषी देश हमारा

भारत की एक विशेषता उसकी बहुभाषिकता है। यदि आपको एक सचेत नागरिक के रूप में भारत से अपनी मातृभाषा में संवाद का अवसर मिले तो आप किन विषयों पर और क्या-क्या संवाद करना चाहेंगे? इन संवादों को अपनी मातृभाषा और हिंदी में लिखिए।

(संकेत— समाज, पर्यावरण, संस्कृति आदि।)

उत्तर: भारत एक बहुभाषी देश है, और अपनी मातृभाषा में अपनी बात कहना हृदय के सबसे करीब होता है। एक सचेत नागरिक के रूप में यदि मुझे भारत (राष्ट्र) से संवाद करना हो, तो मैं पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समरसता जैसे विषयों को चुनूंगा।

नीचे इस संवाद को गुजराती, मराठी, भोजपुरी, पंजाबी (मातृभाषा के उदाहरण के रूप में) और हिंदी में प्रस्तुत किया गया है:

#### 1. गुजराती

विषय: पर्यावरण અને સામાજિક એકતા

"હે ભારત દેશ! હું તારો એક જાગૃત નાગરિક તારી સાથે આજે મારા મનની વાત કરવા માંગુ છું. તારા ખોળામાં જે હરિયાળી અને નદીઓ છે, તેને પ્રદૂષણથી બચાવવા માટે આપણે સૌએ સાથે મળીને પ્રતિજ્ઞા લેવી પડશે. વિકાસ જરૂરી છે, પણ પ્રકૃતિના ભોગે નહીં.

સાથે જ, આપણા સમાજમાં જે વિવિધતા છે, તે આપણી તાકાત છે. આપણે જ્ઞાતિ કે ધર્મના ભેદભાવ ભૂલીને માત્ર એક ભારતીય તરીકે એકબીજાને માન આપીએ અને પ્રેમથી રહીએ, તો જ આપણે સાચા અર્થમાં 'શ્રેષ્ઠ ભારત' બની શકીશું."

#### 2. मराठी

विषय: पर्यावरण आणि सामाजिक एकता

"हे भारत देशा! मी तुझा एक जागरूक नागरिक म्हणून आज तुझ्याशी संवाद साधू इच्छितो. तुझ्या अंगाखांद्यावर खेळणाऱ्या नद्या आणि ही वनसंपदा वाचवण्यासाठी आपल्याला आता एकत्र यावे लागेल. विकास नक्कीच हवा आहे, पण निसर्गाचा बळी देऊन नको.

त्याचबरोबर, आपल्या समाजातील ही विविधता हीच आपली खरी ताकद आहे. आपण जात, धर्म आणि पंथ विसरून एकमेकांचा आदर केला आणि प्रेमाने एकत्र राहिलो, तरच आपण खऱ्या अर्थाने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' बनू शकू."

#### 3. भोजपुरी

विषय: पर्यावरण अउरी सामाजिक एकता

"हे भारत देस! हम तोहार एगो जागरूक नागरिक होखे के नाते आज तोहरा से अपना मन के बात कहल चाहत बानी। तोहरा गोद में जवन हरियाली अउरी नदिया बाड़ी सऽ, ओकरा के प्रदूषण से बचावे खातिर हमनी के सभे के मिल के कसम खाए के परी। विकास जरूरी बा, बाकिर प्रकृति के नुकसान पहुँचा के ना।

संगे-संग, हमनी के समाज में जवन विविधता बा, उहे हमनी के असली ताकत हऽ। हमनी के जात-पात अउरी धरम के भेद भुला के खाली एगो हिंदुस्तानी बन के एक-दोसरा के सम्मान करीं अउरी प्रेम से रहीं, तबहीं हमनी के सही मायने में 'श्रेष्ठ भारत' बन सकब जा।"

#### 4. पंजाबी

विषय: वातावरण अਤੇ समाजिक ऐकता

"हे भारत देश! मैं तेरा ऐक सुचेत नागरिक हेटे ते नाते अँज तेरे नाल आपटे मन दी गँल सँझी करन चहुँदा हं। तेरी गेटे विँच जे हरिआवल अते नदीआं हन, उहनां नुँ पृदुसुट तें बचाउटे लखी सानुँ सारिआं नुँ मिल के सहुँ चुँकटी पवेगी। विकास जरुरी है, पर कुदरत दी कीमत 'ते नही।"

ऐस ते नाल ही, साडे समाज दी वँन-सुवँनता ही साडी असली ताकत है। जे असीं जात-पात अते धरम ते वितकरे बुला के सिरफ ऐक भारती वनें ऐक-दुजे दा सतिवार करीऐ अते पਿਆर नाल रहीऐ, तां ही असीं सही अरथां विँच 'सुँसठ भारत' बट सवांगे।"

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

विषय: पर्यावरण और सामाजिक एकता

"हे भारत देश! मैं तुम्हारा एक सचेत नागरिक आज तुमसे अपने मन की बात करना चाहता हूँ। तुम्हारी गोद में जो हरियाली और नदियाँ हैं, उन्हें प्रदूषण से बचाने के लिए हम सभी को मिलकर प्रतिज्ञा लेनी होगी। विकास जरूरी है, लेकिन प्रकृति की कीमत पर नहीं।"

साथ ही, हमारे समाज में जो विविधता है, वह हमारी ताकत है। हम जाति या धर्म के भेदभाव को भुलाकर केवल एक भारतीय के रूप में एक-दूसरे का सम्मान करें और प्रेम से रहें, तभी हम सही मायने में 'श्रेष्ठ भारत' बन सकेंगे।"

संवाद के मुख्य बिंदु (संकेत के आधार पर):

- पर्यावरण: प्राकृतिक संसाधनों (नदी, वन, पर्वत) को आने वाली पीढ़ी के लिए सहेजने का संकल्प।
- समाज: भेदभाव को मिटाकर आपसी भाईचारे और एकता को बढ़ावा देना।
- संस्कृति: अपनी जड़ों और परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाना।

मातृभाषा और भाव

- "स्तव कर बहु-अर्थ-भरे"

उपर्युक्त पंक्ति में भारत की प्रशंसा विविध अर्थों में की गई है। आप भी अपनी मातृभाषा में भारत की स्तुति के लिए एक कविता की रचना कीजिए और उसका भावार्थ हिंदी में भी लिखिए।

उत्तर: मातृभाषा (हिंदी) में भारत स्तुति

नमन तुझे हे भारत माता!  
हिमगिरि जिसका मुकुट विशाल,  
सागर धोता जिसके पाँव।  
गंगा की धारा निर्मल,  
सुखद यहाँ की शीतल छाँव।

विविध रंग और विविध भाषाएँ,

फिर भी एक हमारा प्राण।  
विश्व गुरु बन राह दिखाए,  
तेरा जग में ऊँचा मान।

भावार्थ (हिंदी में):

इस कविता में कवि कहते हैं कि विशाल हिमालय भारत माता के मस्तक पर मुकुट के समान है और समुद्र निरंतर उनके चरणों को पखारता है। यहाँ बहने वाली गंगा की धारा अत्यंत पवित्र है और यहाँ की प्रकृति की छाया सुख देने वाली है। भारत में अनेक रंग और भाषाएँ होने के बावजूद हम सभी की आत्मा एक है। भारत हमेशा विश्व को सही मार्ग दिखाने वाला 'विश्व गुरु' रहा है और पूरे संसार में इसका सम्मान सबसे ऊँचा है।

संस्कृत में भारत स्तुति (संस्कृतनिष्ठ भारतीय भाषाओं के लिए)

भारत वन्दना

रत्नगर्भा वसुन्धरा, भारती मे माता।

हिमालयः किरीटमस्य, सागरः पदप्रक्षालकः॥

विविधतायां एकता, अस्य देशस्य गरिमा।

ज्ञान-विज्ञान-दीप्तेन, भासते खलु भारतम्॥

भावार्थ (हिंदी में):

रत्नों को गर्भ में धारण करने वाली यह धरती (भारत) मेरी माता है। हिमालय इसका मुकुट है और समुद्र इसके चरणों को धोने वाला है। विविधता में एकता ही इस देश की असली महिमा और गौरव है। यह भारत देश सदैव अपने ज्ञान और विज्ञान के प्रकाश से पूरी दुनिया में सुशोभित होता रहता है।

**समास— समस्त पद एवं विग्रह**

- “कनक-शस्य-कमलधरे”

उपर्युक्त पंक्ति में 'कनक-शस्य' का अर्थ है— कनक के समान शस्य (सोने जैसी फसलें) और कमलधरे का अर्थ है— हे कमल को धारण करने वाली! ये शब्द समास शब्द कहलाते हैं। 'कनक-शस्य' और 'कमलधरा' समस्त पद/सामासिक पद हैं। कमलधरे संबोधन शब्द है।

समास का अर्थ है संक्षेप। समास में दो या अनेक शब्दों के मेल से एक नए शब्द की रचना होती है। समास रचना में प्रायः दो पद (शब्द) होते हैं। पहले पद को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। समास रचना से बने शब्द को 'समस्त पद' कहते हैं। यदि समास रचना से बने शब्द (समस्त पद) के अंग अलग-अलग करने हों, तो उस प्रक्रिया को समास विग्रह कहते हैं। आपने 'क्या लिखूँ?' निबंध के अभ्यास में समास और सामासिक पदों के बारे में विस्तार से जाना है। कविता में से चुनकर कुछ सामासिक पद (शब्द) नीचे दिए गए हैं। उनके समास-विग्रह अपनी लेखन-पुस्तिका में लिखिए।

शतदल

ज्योतिर्जल

शतमुख

सागरजल

उत्तर:

समस्त पद (सामासिक शब्द)	समास-विग्रह	समास का नाम (अतिरिक्त जानकारी)
- शतदल	- शत (सौ) दलों (पंखुड़ियों) का समूह	- द्विगु समास (संख्यावाचक)
- ज्योतिर्जल	- ज्योति (प्रकाश) रूपी जल	- कर्मधारय समास (विशेषण-विशेष्य)
- शतमुख	- शत (सौ) मुखों का समूह	- द्विगु समास
- सागरजल	- सागर का जल	- तत्पुरुष समास (सम्बन्ध तत्पुरुष)

अभ्यास के अन्य उदाहरण (कविता के आधार पर)

- कनक-शस्य: कनक (सोने) के समान शस्य (फसलें) — कर्मधारय समास
- हिम-तुषार: हिम का तुषार (बर्फ की ओस) — तत्पुरुष समास
- पदतल: पद (पैर) का तल (नीचे का भाग) — तत्पुरुष समास

### अलंकार— समझ और प्रयोग

- “शतमुख-शतरव-मुखरे!”

उपर्युक्त पंक्ति के ‘शतमुख’ और ‘शतरव’ में ‘श’ वर्ण की पुनरावृत्ति हो रही है, इसीलिए यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

- “मुकुट शुभ्र हिम-तुषार”

उपर्युक्त पंक्ति में हिमालय को भारत का मुकुट कहा गया है। वास्तव में हिमालय मुकुट नहीं है, लेकिन कवि ने कल्पना के बल पर उसे मुकुट का रूप दे दिया। इससे भारत की छवि भव्य और दिव्य बन जाती है। यहाँ गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद स्थापित किया गया है, इसीलिए यहाँ रूपक अलंकार है।

‘रैदास के पद’ पाठ में आपने अलंकार के विषय में विस्तार से जाना-समझा है। अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) कविता में जहाँ-जहाँ अनुप्रास अलंकार आया है, उन पंक्तियों को खोजकर लिखिए।

उत्तर: कविता में अनुप्रास अलंकार वाली पंक्तियाँ:

- “भारति, जय, विजयकरे!”  
→ यहाँ ‘ज’ वर्ण की आवृत्ति (जय, विजय) हो रही है।
- “कनक-शस्य-कमलधरे!”  
→ यहाँ ‘क’ वर्ण की आवृत्ति (कनक, कमल) हो रही है।
- “धोता शुचि चरण युगल”  
→ यहाँ ‘च’ वर्ण की आवृत्ति (शुचि, चरण) हो रही है।
- “तरु-तृण-वन-लता वसन”  
→ यहाँ ‘त’ वर्ण की आवृत्ति (तरु, तृण) हो रही है।
- “शतमुख-शतरव-मुखरे!”

→ यहाँ 'श' वर्ण की आवृत्ति (शतमुख, शतरव) हो रही है।

(ख) कविता की उन पंक्तियों को खोजिए जहाँ रूपक अलंकार है। साथ ही यह भी बताइए कि कवि ने किस प्राकृतिक दृश्य या वस्तु को भारत का रूप मानकर चित्रित किया है?

उत्तर: रूपक अलंकार में उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) और उपमान (जिससे तुलना की जाए) के बीच का भेद समाप्त कर उन्हें एक ही मान लिया जाता है।

रूपक अलंकार वाली पंक्तियाँ:

- "मुकुट शुभ्र हिम-तुषार"
- "धवल धार हार गले"
- "तरु-तृण-वन-लता वसन"

प्राकृतिक दृश्य/वस्तु जिन्हें रूप मानकर चित्रित किया गया है:

कवि ने भारत माता को एक साक्षात् देवी के रूप में कल्पित किया है और प्रकृति के विभिन्न अंगों को उनके शरीर के श्रृंगार के रूप में दर्शाया है:

- हिमालय (प्राकृतिक वस्तु): इसे भारत माता का 'मुकुट' माना गया है। हिमालय की ऊँची और बर्फ से ढकी चोटियाँ मस्तक पर शोभायमान मुकुट के समान दिखाई देती हैं।
- गंगा की धारा (प्राकृतिक दृश्य): इसे भारत माता के 'गले का हार' माना गया है। पहाड़ों से उतरती हुई गंगा की सफेद धारा गले में पहने हुए मोतियों के हार जैसी लगती है।
- वनस्पति/हरियाली (प्राकृतिक दृश्य): तरु (वृक्ष), तृण (घास) और लताओं को भारत माता के 'वसन' (वस्त्र/कपड़े) के रूप में चित्रित किया गया है। धरती की हरियाली माता के आंचल और परिधान जैसी प्रतीत होती है।
- लंका (भौगोलिक स्थान): इसे माता के चरणों के पास स्थित 'कमल' (पदतल शतदल) के रूप में चित्रित किया गया है।

निष्कर्ष: रूपक अलंकार के माध्यम से निराला जी ने भारत की भौगोलिक विशेषताओं को एक भव्य मानवीय स्वरूप प्रदान किया है, जिससे कविता में अद्भुत सौंदर्य और श्रद्धा का संचार होता है।

## गतिविधियाँ

### मिलकर लें शपथ

"तरु-तृण-वन-लता वसन/ अंचल में खचित सुमन"

वन, लता, पुष्प आदि भारत के अमूल्य प्राकृतिक संसाधन हैं। इनके संरक्षण के लिए सरकार द्वारा बनाए गए अधिनियमों के बारे में सूचना एकत्रित कीजिए और वन संरक्षण के लिए बनाए नियमों पर विचार कीजिए।

उत्तर: भारत सरकार ने पर्यावरण और वनों की रक्षा के लिए कई कड़े कानून बनाए हैं। प्रमुख अधिनियम निम्नलिखित हैं:

- भारतीय वन अधिनियम, 1927 (Indian Forest Act, 1927): यह वनों की सुरक्षा और वनोपज (लकड़ी, फल आदि) के आवागमन को नियंत्रित करने वाला सबसे पुराना और आधारभूत कानून है।

- वन संरक्षण अधिनियम, 1980 (Forest Conservation Act, 1980): इसका मुख्य उद्देश्य वनों की कटाई को रोकना है। यह नियम सुनिश्चित करता है कि वनों की भूमि का उपयोग गैर-वानिकी कार्यों (जैसे फैक्ट्री या सड़क बनाना) के लिए सरकार की विशेष अनुमति के बिना न किया जाए।
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 (Wildlife Protection Act, 1972): यह जानवरों के साथ-साथ दुर्लभ पौधों और लताओं के अवैध शिकार और व्यापार को रोकता है।
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 (Environment Protection Act, 1986): यह हवा, पानी और मिट्टी के साथ-साथ पूरे पारिस्थितिकी तंत्र (Ecosystem) की रक्षा के लिए बनाया गया व्यापक कानून है।

वनों को बचाने के लिए केवल कानून ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि कुछ बुनियादी नियमों का पालन करना अनिवार्य है:

- पुनर्वनीकरण (Afforestation): यदि किसी अनिवार्य कार्य के लिए एक पेड़ काटा जाता है, तो उसके स्थान पर कम से कम पाँच नए पौधे लगाए जाने चाहिए और उनकी देखभाल की जानी चाहिए।
- अवैध कटाई पर रोक: वनों से बिना अनुमति लकड़ी काटना या व्यावसायिक लाभ के लिए वनों को जलाना दंडनीय अपराध है।
- स्थानीय समुदायों की भागीदारी: वनों के पास रहने वाले लोगों (आदिवासियों और ग्रामीणों) को वन संरक्षण का हिस्सा बनाना चाहिए, क्योंकि वे प्रकृति के सबसे करीब होते हैं।
- जन जागरूकता: स्कूलों और समुदायों में 'वन महोत्सव' जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से वृक्षों के महत्व को समझाना चाहिए।

हमारी शपथ (The Pledge): "मैं शपथ लेता/लेती हूँ कि मैं भारत की प्राकृतिक सुंदरता—तरु, तृण, वन और लताओं की रक्षा करूँगा/करूँगी। मैं न केवल पेड़ लगाऊँगा/लगाऊँगी, बल्कि उन्हें पाल-पोसकर बड़ा भी करूँगा/करूँगी और अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ व हरा-भरा रखने का पूर्ण प्रयास करूँगा/करूँगी।"

## भाषा संगम

“कनक-शस्य-कमलधरे”

कविता में आए 'शस्य' शब्द का अर्थ 'उपज' भी होता है। नीचे 'उपज' शब्द के लिए संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कुछ भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्दों की सूची दी गई है।

जो उपजा हो, पैदावार, फसल (हिंदी); शस्यम् (संस्कृत); उपज, पैदावार (पंजाबी); पैदावार (उर्दू); पौदावार (कश्मीरी); उपज, पैदावार (सिंधी); पीक (मराठी); ऊपज, पेदाश (गुजराती); पीक (कोंकणी); उब्जाबाली, उपज (नेपाली); फसल (बांग्ला); शस्य, खेति, फचल, कृषि जात वस्तु (असमिया); महै मरोड् थाबा पोत्थोक (मणिपुरी); फसल, खेति (ओड़िआ); पंट (तेलुगु); विळैच्चल् (तमिल); विळवु (मलयालम); बेळे फसलु (कन्नड़)।

इनके अतिरिक्त यदि आप 'शस्य' शब्द को किसी और भाषा में भी जानते हैं तो उस भाषा में भी लिखिए।

उपर्युक्त वाक्य को अपनी मातृभाषा में भी लिखिए।

<https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp>

उत्तर: ऊपर दी गई सूची के अतिरिक्त, 'शस्य' या 'उपज' के लिए कुछ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं या बोलियों में प्रयुक्त शब्द निम्नलिखित हैं:

- भोजपुरी: उपजल, फसल, पैदावार
- मैथिली: उपज, फसल
- राजस्थानी (मारवाड़ी): नीपज, ऊपज
- गढ़वाली/कुमाऊँनी: फसल, पैदावार
- अंगिका: उपज, खेती

चूँकि आपने पूर्व में मराठी, भोजपुरी और पंजाबी में रुचि दिखाई है, इसलिए उन भाषाओं में इस वाक्य का अनुवाद नीचे दिया गया है (आप अपनी पसंद की भाषा चुन सकते हैं):

- मराठी (Marathi): "कनक-शस्य-कमलधरे या कवितेतील 'शस्य' या शब्दाचा अर्थ 'पीक' असाही होतो."
- भोजपुरी (Bhojpuri): "कनक-शस्य-कमलधरे कविता में आइल 'शस्य' शब्द के अरथ 'उपज' चाहे 'फसल' भी होला।"
- पंजाबी (Punjabi): "ਕਨਕ-ਸ਼ਸਯ-ਕਮਲਧਰੇ ਕਵਿਤਾ ਵਿੱਚ ਆਏ 'ਸ਼ਸਯ' ਸ਼ਬਦ ਦਾ ਅਰਥ 'ਉਪਜ' ਜਾਂ 'ਫਸਲ' ਵੀ ਹੁੰਦਾ ਹੈ।"

(कनक-शस्य-कमलधरे कविता विच आए 'शस्य' शब्द दा अरथ 'उपज' या 'फसल' वी हुंदा है।)

### झरोखे से

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की भाँति मैथिलीशरण गुप्त ने भी भारत का मनोरम और ओजस्वी गुणगान किया है। आइए, नीचे उनकी चर्चित कविता 'जय जय भारतमाता' का एक अंश पढ़ते हैं।

जय जय भारतमाता  
 जय जय भारतमाता!  
 तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।  
 ऊँचा हिया हिमालय तेरा  
 उसमें कितना दरद भरा  
 फिर भी आग दबाकर अपनी  
 रखता है वह हमें हरा  
 सौ सौतों से फुट-फुटकर पानी टूटा आता  
 जय जय भारतमाता!

— मैथिलीशरण गुप्त

(इस कविता को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरा पढ़िए।)

उत्तर: मैथिलीशरण गुप्त की कविता "जय जय भारतमाता" में कवि ने भारत माता की महिमा, महानता और सहनशीलता का सुंदर वर्णन किया है।

कवि कहते हैं कि भारत माता सबको अपने घर जैसा स्नेह देती है। हिमालय को भारत का हृदय बताया गया है, जो अपने अंदर कष्ट सहते हुए भी हमें हरियाली और जीवन प्रदान करता है।

कविता में यह भी बताया गया है कि भारत की नदियाँ अनेक स्रोतों से निकलकर देश को जीवन देती हैं।

इस प्रकार, यह कविता देशप्रेम, प्रकृति की महानता और भारत की उदारता का ओजस्वी गुणगान करती है।

### खोजबीन

देशप्रेम से संबंधित अन्य कविताएँ पुस्तकालय, इंटरनेट से खोजकर पढ़िए और किसी एक कविता का कक्षा में वाचन भी कीजिए।

इस कविता की तरह ही संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से युक्त निराला की एक अन्य कविता, 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!' पुस्तकालय, इंटरनेट से ढूँढ़कर पढ़िए।

उत्तर: देशप्रेम से संबंधित अन्य कविता:

#### पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,  
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।  
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि, डाला जाऊँ,  
चाह नहीं, देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।  
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक,  
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

निराला जी की संस्कृतनिष्ठ कविता: 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!'

वर दे, वीणावादिनि वर दे!

वर दे, वीणावादिनि वर दे!

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव भारत में भर दे!

काट अंध-उर के बंधन-स्तर,

बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;

कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर,

जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,

नवल कंठ, नव जलद-मंद्रवर;

नव नभ के नव विहग-वृंद को,

नव पर, नव स्वर दे!

शिक्षण टिप:

- वाचन के लिए: 'पुष्प की अभिलाषा' पढ़ते समय वीरता और त्याग के भाव का ध्यान रखें।
- शब्दावली: 'वर दे, वीणावादिनि वर दे!' में 'अमृत-मंत्र', 'ज्योतिर्मय', और 'जलद-मंद्रव' जैसे शब्दों पर ध्यान दें, जो निराला जी की भाषा की गरिमा को दर्शाते हैं।